STD. VIII HINDI LIT.(कौरव नगरी -भाग I)

प्रश्न उत्तर:---

प्रश्न 1. इस काव्य नाटक का नाम अंधायुग रखने के पीछे डॉ. धर्मवीर भारती का क्या औचित्य है?

उत्तर:--- यह कथा ज्योति की है ,प्रकाश की है -अंधों के माध्यम से।क्योंकि इस काव्य में ज़्यादातर लोग अंधे हैं- कुछ नेत्रहीन हैं तथा सोच व विचार में अंधे हैं ,कुछ दिशाविहीन हैं,कुछ पुत्र मोह में अंधे हैं, कुछ राजसी ठाठ-बाट व उन्माद में अंधे हैं, कुछ ताक़त व अपने सद्गुणों में अंधे हैं ,जिन्हें सच्चाई और अच्छाई दिखकर भी नहीं दिखती।

हस्तिनापुर का सिंहासन अंधों से सुशोभित था,

और इसमें अधिकतर पात्रों को सही - ग़लत का अंतर नहीं मालूम देता ,इसलिए इस काव्य का नाम अंधा युग है।

प्रश्न 2.कवि ने क्यों कहा कि मर्यादाएँ बिखर चुकी?

उत्तर:-- महाभारत का युद्ध दो देशों या दो शत्रुओं के बीच युद्ध नहीं; बल्कि दो भाइयों के बीच था,धर्म - अधर्म के बीच था। पुत्र मोह में एक अंधे पिता का स्वार्थ, सत्ता की लालसा ने कुल की मर्यादा, राज धर्म, लोक -लाज, इज़्ज़त, मान-सम्मान, भाईचारे की भावना को तार-तार कर दिया , सारी मर्यादाएँ टूट गईं, सारी हदें पार हो गईं थीं ,चारों ओर पाप का, छल का, द्वेष का अंधकार ही था।

प्रश्न 3 भीष्म पितामह हस्तिनापुर में हो रहे षड्यंत्र के ख़िलाफ़ क्यों न कुछ बोल सके?

उत्तर :--भीष्म पितामह ने आजीवन राज्य की सेवा करने की प्रतिज्ञा ली थी ,लेकिन समय के साथ उनकी यह प्रतिज्ञा अभिशाप बनने लगी ।वह राज्य में होने वाले निर्णयों में केवल अपना विचार रख सकते थे ,उसे मनवाना उनके वश में न था ।धृतराष्ट्र के राजा बनने के बाद यह स्थिति और विकट हो गई क्योंकि आए दिन शकुनी की बातों में आकर अथवा पुत्र मोह में ,धृतराष्ट्र कोई भी अनुचित निर्णय ले लेते थे और पितामह कुछ भी न कर पाते।

वह सही होते हुए भी ग़लत के पक्ष में थे,उनकी प्रतिज्ञा ही उनके मौन का कारण और अंततः उनका अभिशाप बन गई।